

पाठ 1.3 : अपूर्व अनुभव

तेत्सुको कुरोयानागी



यूनिसेफ की सद्भावना दूत रहीं **तेत्सुको कुरोयानागी** का जन्म 9 अगस्त 1933 को टोकियो, जापान में हुआ था। मूलतः जापानी भाषा में लिखी गई पुस्तक **तोत्तो-चान** विश्व साहित्य की एक चर्चित कृति है। इसका अनुवाद विश्व की कई भाषाओं में हो चुका है। यह एक ऐसी अद्भुत स्कूल तोमोए और उसमें पढ़नेवाले बच्चों की कहानी है, जिनके लिए रेल के डिब्बे कक्षाएँ थीं, गहरी जड़ोंवाले पेड़ स्कूल का गेट, पेड़ की शाखा बच्चों के खेलने के कोने। इस अनोखे स्कूल के संस्थापक थे श्री कोबायाशी। लेखिका स्वयं इस स्कूल की छात्रा थीं। उन्हीं के बचपन के अनुभवों पर आधारित पुस्तक **तोत्तो-चान** का एक अंश है 'अपूर्व अनुभव'।

सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद तोत्तो-चान के लिए एक बड़ा साहस करने का दिन आया। इस दिन उसे यासुकी-चान से मिलना था। इस भेद का पता न तो तोत्तो-चान के माता-पिता को था न ही यासुकी-चान को। उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने का न्यौता दिया था।

तोमोए में हरेक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। तोत्तो-चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जाने वाली सड़क के पास था। बड़ा सा पेड़ था उसका। चढ़ने जाओ तो पैर फिसल-फिसल जाते, पर ठीक से चढ़ने पर जमीन से कोई छह फुट की ऊँचाई पर एक द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। बिल्कुल किसी झूले-सी आरामदेह जगह थी यह। तोत्तो-चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद ऊपर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह सामने दूर तक, ऊपर आकाश को, या नीचे सड़क पर चलते लोगों को देखा करती थी।

बच्चे अपने-अपने पेड़ को निजी संपत्ति मानते थे। किसी दूसरे के पेड़ पर चढ़ना हो तो उससे पहले पूरी शिष्टता से, "माफ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?" पूछना पड़ता था।

यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ पाता था और न किसी पेड़ को निजी संपत्ति मानता था। अतः तोत्तो-चान ने उसे अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था। पर यह बात उन्होंने किसी से नहीं कही, क्योंकि अगर बड़े सुनते तो जरूर डाँटते।

घर से निकलते समय तोत्तो-चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है। चूँकि वह झूठ बोल रही थी, इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। अपनी नजरें वह जूतों की फीतों पर ही गड़ाए रखी। रॉकी उसके पीछे-पीछे स्टेशन तक आया। जाने से पहले उसे सच बताए बिना तोत्तो-चान से रहा नहीं गया।

“मैं यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ने देने वाली हूँ।” उसने बताया।

जब तोत्तो-चान स्कूल पहुँची तो रेल-पास उसके गले के आसपास हवा में उड़ रहा था। यासुकी-चान उसे मैदान में क्यारियों के पास मिला। गर्मी की छुट्टियों के कारण सब सूना पड़ा था। यासुकी-चान उससे कुल जमा एक ही वर्ष बढ़ा था, पर तोत्तो-चान को वह अपने से बहुत बढ़ा लगता था।

जैसे ही यासुकी-चान ने तोत्तो-चान को देखा, वह पैर घसीटता हुआ उसकी ओर बढ़ा। उसके हाथ अपनी चाल को स्थिर करने के लिए दोनों ओर फैले हुए थे। तोत्तो-चान उत्तेजित थी। वे दोनों आज कुछ ऐसा जो करने वाले थे जिसका भेद किसी को भी न पता था। वह उत्तेजना में ठिठिया कर हँसने लगी। यासुकी-चान भी हँसने लगा।

तोत्तो-चान यासुकी-चान को अपने पेड़ की ओर ले गयी। और उसके बाद वह तुरंत चौकीदार के छप्पर की ओर भागी, जैसा उसने रात को ही तय कर लिया था। वहाँ से वह एक सीढ़ी घसीटती हुई लाई। उसे तने के सहारे ऐसे लगाया, जिससे वह द्विशाखा तक पहुँच जाए। वह फुर्ती से ऊपर चढ़ी और सीढ़ी के किनारे को पकड़ लिया। तब उसने पुकारा, “ठीक है, अब ऊपर चढ़ने की कोशिश करो।”

यासुकी-चान के हाथ-पैर इतने कमजोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी बिना सहारे के चढ़ नहीं पाया। इस पर तोत्तो-चान नीचे उतर आई और यासुकी-चान को पीछे से धकियाने लगी। पर तोत्तो-चान थी छोटी और नाजुक सी, इससे अधिक सहायता क्या करती। यासुकी-चान ने अपना पैर सीढ़ी पर से हटा लिया और हताशा से सिर झुका कर खड़ा हो गया। तोत्तो-चान को पहली बार लगा कि काम उतना आसान नहीं है जितना वह सोचे बैठी थी। अब क्या करे वह?

यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े, यह उसकी हार्दिक इच्छा थी। यासुकी-चान के मन में भी उत्साह था। वह उसके सामने गई। उसका लटका चेहरा इतना उदास था कि तोत्तो-चान को उसे हँसाने के लिए गाल फुलाकर तरह-तरह के चेहरे बनाने पड़े।

“ठहरो, एक बात सूझी है।”

वह फिर चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी और हरेक चीज उलट-पुलट कर देखने लगी। आखिर उसे एक तिपाई-सीढ़ी मिली जिसे थामे रहना भी जरूरी नहीं था।

वह तिपाई-सीढ़ी को घसीटकर ले आई तो अपनी शक्ति पर हैरान होने लगी। तिपाई की ऊपरी सीढ़ी द्विशाखा तक पहुँच रही थी।

“देखो, अब डरना मत,” उसने बड़ी बहन की सी आवाज में कहा, “यह डगमगाएगी नहीं।”

यासुकी-चान ने घबराकर तिपाई-सीढ़ी की तरफ देखा। तब उसने पसीने से तरबतर तोत्तो-चान को देखा। यासुकी-चान को भी काफी पसीना आ रहा था। उसने पेड़ की ओर देखा और तब निश्चय के साथ पाँव उठाकर पहली सीढ़ी पर रखा।

उन दोनों को यह बिल्कुल भी पता नहीं चला कि कितना समय यासुकी-चान को ऊपर तक चढ़ने में लगा। सूरज का ताप उन पर पड़ रहा था, पर दोनों का ध्यान यासुकी-चान के ऊपर तक पहुँचने में रमा था। तोत्तो-चान नीचे से उसका एक-एक पैर सीढ़ी पर धरने में मदद कर रही थी। अपने सिर से वह उसके पिछले हिस्से को भी स्थिर करती रही। यासुकी-चान पूरी शक्ति के साथ जूझ रहा था, और आखिरकार वह ऊपर पहुँच गया।



“हुर्रे !”

पर अचानक सारी की हुई मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो-चान तो सीढ़ी पर से द्विशाखा पर छलौंग लगा कर पहुँच गई, पर यासुकी-चान को सीढ़ी से पेड़ पर लाने की हर कोशिश बेकार रही। यासुकी-चान सीढ़ी थामे तोत्तो-चान की ओर ताकने लगा। तोत्तो-चान की रुलाई छूटने को हुई। उसने चाहा था कि यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नई-नई चीजें दिखाए।

पर वह रोई नहीं। उसे डर था कि उसके रोने पर यासुकी-चान भी रो पड़ेगा। उसने यासुकी-चान की पोलियो से पिचकी और अकड़ी उँगलियों वाला हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसके खुद के हाथ से वह बड़ा था, उँगलियाँ भी लंबी थीं। देर तक तोत्तो-चान उसका हाथ थामे रही। तब बोली, “तुम लेट जाओ, मैं तुम्हें पेड़ पर खींचने की कोशिश करती हूँ।”

उस समय द्विशाखा पर खड़ी तोत्तो-चान द्वारा यासुकी-चान को पेड़ की ओर खींचते अगर कोई बड़ा देखता तो वह जरूर डर के मारे चीख उठता। उसे वे सच में जोखिम उठाते ही दिखाई देते। पर यासुकी-चान

को तोत्तो-चान पर पूरा भरोसा था और वह खुद भी यासुकी-चान के लिए भारी खतरा उठा रही थी। अपने नन्हे-नन्हे हाथों से वह पूरी ताकत से यासुकी-चान को खींचने लगी। बादल का एक बड़ा टुकड़ा बीच-बीच में छाया करके उन्हें कड़कती धूप से बचा रहा था।

काफी मेहनत के बाद दोनों आमने-सामने पेड़ की द्विशाखा पर थे। पसीने से तरबतर अपने बालों को चेहरे पर से हटाते हुए तोत्तो-चान ने सम्मान से झुककर कहा, “मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत है।”

यासुकी-चान डाल के सहारे खड़ा था। कुछ झिझकता हुआ वह मुस्कराया। तब उसने पूछा, “क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?”

उस दिन यासुकी-चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी जिसे उसने पहले कभी न देखा था। “तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना,” यासुकी-चान ने खुश होते हुए कहा।

वे बड़ी देर तक पेड़ पर बैठे-बैठे इधर-उधर की गप्पें लड़ाते रहे।

“मेरी बहन अमरीका में है। उसने बताया है कि वहाँ एक चीज होती है— टेलीविजन।” यासुकी-चान उमंग से भरा बता रहा था। “वह कहती है कि जब वह जापान में आ जाएगा, तो हम घर बैठे-बैठे ही सूमो-कुश्ती देख सकेंगे। वह कहती है कि टेलीविजन एक डिब्बे जैसा होता है।”

तोत्तो-चान उस समय यह तो न समझ पाई कि यासुकी-चान के लिए, जो कहीं भी दूर तक चल नहीं सकता था, घर बैठे चीजों को देख लेने के क्या अर्थ होंगे।

वह तो यह ही सोचती रही कि सूमो पहलवान घर में रखे किसी डिब्बे में कैसे समा जाएँगे? उनका आकार तो बड़ा होता है। पर बात उसे बड़ी लुभावनी लगी। उन दिनों टेलीविजन के बारे में कोई नहीं जानता था। पहले-पहले यासुकी-चान ने ही तोत्तो-चान को उसके बारे में बताया था।

पेड़ मानो गीत गा रहे थे और दोनों बेहद खुश थे। यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था।

शब्दार्थ

शिविर — तंबू आदि लगाकर बनाया गया यात्री निवास, अस्थायी पड़ाव; **सभागार** — वह स्थान जहाँ सभा होती है, सभाकक्ष; **भेद** — राज की बात, गुप्त बात; **द्विशाखा** — पेड़ की दो शाखाएँ या डाल; **हताशा** — आशा का न रहना, निराशा।

अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ पर चढ़ना एक सुखद अनुभव है, इस पर अपने विचार रखिए और बताइए कि यासुकी-चान इस अपूर्व अनुभव से वंचित क्यों था?
2. "तोत्तो-चान ने माँ से कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है" यह बात कहते हुए उसकी नजरें जूतों के फीते पर क्यों गड़ी रहीं? वह कौन सी स्थितियाँ होती हैं, जब आप अपने बड़ों से आँखें चुराते हैं। लिखिए।
3. तोत्तो-चान की हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े, आपके अनुसार वह कौन-कौन से कारण रहे होंगे जिसकी वजह से तोत्तो-चान उसे अपने पेड़ पर चढ़ाना चाहती थी?
4. "तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना" यासुकी-चान के इस कथन को ध्यान में रखते हुए पेड़ पर चढ़ने के बाद हुई खुशी को अपने शब्दों में लिखिए।
5. तोत्तो-चान द्वारा यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाना एक जोखिम भरा काम था। आपके अनुसार तोत्तो-चान का यह कार्य उचित था या अनुचित? अपने विचार रखिए।
6. दृढ़निश्चय और कठिन परिश्रम से पेड़ पर अपने मित्र को चढ़ाने के बाद तोत्तो-चान और यासुकी-चान को जिस प्रकार की खुशी हुई, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
7. "यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था" सोचकर बताइए कि लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

पाठ से आगे

1. तोत्तो-चान द्वारा यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाना साहसिक कार्य था। हम अपने दैनिक जीवन में कौन-कौन से बहादुरी या साहस के कार्य करते हैं। उदाहरण सहित बताइए।
2. यासुकी-चान जैसे शारीरिक चुनौतियों वाले व्यक्ति के प्रति सहानुभूति जताना अथवा असंवेदनशीलता दोनों ही प्रकार के व्यवहार उन्हें ठेस पहुँचाते हैं। आपकी समझ से उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?
3. तोत्तो-चान ने माता-पिता से झूठ बोलकर अपने मित्र यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने जैसा साहसिक कार्य किया। आपने भी यदि किसी की सहयोग के लिए या किसी अच्छे कार्य के लिए झूठ का सहारा लिया हो, तो निःसंकोच उल्लेख करें।
4. यासुकी-चान जैसे शारीरिक चुनौतियों से जूझने वाले व्यक्तियों के लिए विशेष सुविधा की आवश्यकता होती है। विद्यालयों अथवा सार्वजनिक स्थलों पर ऐसे कौन-कौन से भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। आपसी चर्चा के पश्चात् एक सूची तैयार कीजिए।



भाषा के बारे में

1. **द्विशाखा, तिपाई** जैसे शब्दों का उल्लेख इस पाठ में हुआ है। इन शब्दों का पहला पद संख्यावाची विशेषण है। इस तरह के शब्दों से बने संख्यावाची पदों को द्विगु समास कहते हैं। जब संख्यावाची पदों से किसी विशेष अर्थ का बोध होता है तब वहाँ बहुव्रीहि समास होता है, जैसे— दशानन। द्विगु और बहुव्रीहि समास के पाँच-पाँच उदाहरण लिखिए।

2. नीचे दी गई पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करें—

यासुकी—चान डाल के सहारे खड़ा था कुछ झिझकता हुआ वह मुस्कराया तब उसने पूछा क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ

उस दिन यासुकी—चान ने दुनिया की एक नई झलक देखी जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था तो ऐसा होता है पेड़ पर चढ़ना यासुकी—चान ने खुश होते हुए कहा

3. 'इस **भेद** का पता न तो तोतो—चान के माता—पिता को था न ही यासुकी—चान को।' इस वाक्य में **भेद** शब्द का प्रयोग राज़ या गुप्त बात के लिए हुआ है। **भेद** शब्द का प्रयोग कई बार अंतर बताने (जैसे—मनुष्य और पशु में **भेद** होता है।), प्रकार बताने (संज्ञा शब्द के तीन भेद होते हैं।) आदि के लिए होता है। आप भी **भेद** शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाइए।



4. कुछ क्रियाओं से संज्ञा शब्द बनते हैं जैसे— रोना से रुलाई, धोना से धुलाई इत्यादि। यहाँ **ओ—'उ'** में तथा **आ—'ई'** में बदल जाते हैं। कुछ इसी तरह की क्रियाओं से संज्ञा शब्द बनाइए और यह भी देखिए कि इसके लिए उनमें किस तरह के बदलाव की जरूरत पड़ती है?

योग्यता विस्तार

1. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से या शिक्षकों की मदद से निम्नलिखित के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए और पढ़िए।

- शिवानी की कहानी 'अपराजिता', हेलेन केलर की जीवनी, यशपाल की कहानी 'गूँगे'।



2. शारीरिक चुनौती वाले व्यक्तियों का समाज के प्रति क्या दृष्टिकोण होता है उनसे चर्चा कर लिखिए।

3. समास व इसके भेदों पर अपने शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कीजिए।

